09-09-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे - अपने ऊपर आपेही कृपा करनी है, पढ़ाई में गैलप करो, कोई भी विकर्म करके अपना रजिस्टर खराब नहीं करो"

प्रश्नः- इस ऊंची पढ़ाई में पास होने के लिए मुख्य शिक्षा कौन-सी मिलती है? उसके लिए किस बात पर विशेष अटेन्शन चाहिए?

उत्तरः- इस पढ़ाई में पास होना है तो आंखें बहुत-बहुत पवित्र होनी चाहिए क्योंकि यह आंखें ही धोखा देती हैं, यही क्रिमिनल बनती हैं। शरीर को देखने से ही कर्मेन्द्रियों में चंचलता आती है इसलिए आंखें कभी भी क्रिमिनल न हों, पवित्र बनने के लिए भाई-बहिन होकर रहो, याद की यात्रा पर पूरा-पूरा अटेन्शन दो।

गीत:-धीरज धर मनुवा..... Click

धीरज धर मनवा, धीरज धर
तेरे सुखके भरे दिन आयेंगे
तक़दीर का सूरज चमकेगा
ग़म के बादल हट जायेंगे
धीरज धर मनवा, धीरज धर

क्यों घूम रहे हो भँवरे से
क्यों घूम रहे हो भँवरे से
घबराये हुए भरमाये हुए
तेरी पतझड़ के पत्ते उड़ाते
आँचल में बसन्त छुपाये हुए
इन काँटों को
इन काँटों को चुन चुन रख ले
कलियों के चमन बन जायेंगे

धीरज धर मनवा, धीरज धर

साग़र की तरन्गें टकराके
टकराके स्वयं ही डूबेंगी
तेरी सच की नाव डोलेगि बहुत
डोलेगि मगर न डूबेगी
तूफ़ानों के
तूफ़ानों के झोंके ही तेरी
नैय्या को किनारे लगायेंगे

धीरज धर मनवा, धीरज धर
तेरे सुखके भरे दिन आयेंगे
तक़दीर का सूरज चमकेगा
ग़म के बादल हट जायेंगे
धीरज धर मनवा, धीरज धर

ओम् शान्ति। किसने कहा? बेहद के बाप ने बेहद के बच्चों को कहा। जैसे कोई मनुष्य बीमारी में

होता है तो उनको आथत दिया जाता है कि धीरज धरो - तुम्हारे सब दु:ख दूर हो जायेंगे। उनको खुशी में लाने के लिए आथत दिया जाता है। अब वह तो हैं हद की बातें। यह है बेहद की बात, इनके कितने ढेर बच्चे होंगे। सबको दु:ख से छुड़ाना है। यह भी तुम बच्चे ही जानते हो। तुमको भूलना नहीं चाहिए। बाप आये हैं सर्व की सद्गति करने। सर्व का सद्गति दाता है तो इसका मतलब सभी दुर्गति में हैं। सारी दुनिया के मनुष्य मात्र, उनमें भी खास भारत आम दुनिया कहा जाता है। खास तुम सुखधाम में जायेंगे। बाकी सब शान्तिधाम में चले जायेंगे। बुद्धि में आता है - बरोबर हम सुखधाम में थे तो और धर्म वाले शान्तिधाम में थे। बाबा आया था, भारत को सुखधाम बनाया था। तो एडवरटाइजमेंट भी ऐसी करनी चाहिए। समझाना है हर 5 हज़ार वर्ष बाद निराकार शिवबाबा आते हैं। वह सभी का बाप है। बाकी सब ब्रदर्स हैं। ब्रदर्स ही पुरुषार्थ करते हैं फादर से वर्सा लेने। ऐसे तो नहीं फादर्स पुरुषार्थ करते हैं। सब फादर्स हों तो फिर वर्सा किससे लेंगे? क्या ब्रदर्स से? यह तो

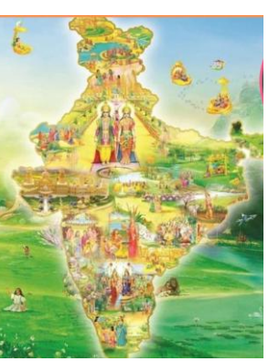

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

Point to be Noted

हो न सके। अभी तुम समझते हो - यह तो बहुत सहज बात है। सतयुग में एक ही देवी-देवता धर्म होता है। बाकी सब आत्मायें मुक्तिधाम में चली जाती हैं। वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी रिपीट कहते हैं तो जरूर एक ही हिस्ट्री-जॉग्राफी है जो रिपीट होती है। कलियुग के बाद फिर सतयुग होगा। दोनों के बीच में फिर संगमयुग भी जरूर होगा। इसको कहा जाता है सुप्रीम, पुरुषोत्तम कल्याणकारी युग। अभी तुम्हारी बुद्धि का ताला खुला है तो समझते हो यह तो बहुत सहज बात है। नई दुनिया और पुरानी दुनिया। पुराने झाड़ में जरूर बहुत पत्ते होंगे। नये झाड़ में थोड़े पत्ते होंगे। वह है सतोप्रधान दुनिया, इनको तमोप्रधान कहेंगे। तुम्हारा भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार बुद्धि का ताला खुला है क्योंकि सब यथार्थ रीति बाप को याद नहीं करते हैं। तो धारणा भी नहीं होती है। बाप तो पुरुषार्थ कराते हैं, परन्तु तकदीर में नहीं है। ड्रामा अनुसार जो अच्छी रीति पढ़ेंगे पढ़ायेंगे, बाप के मददगार बनेंगे, हर हालत में ऊंच पद वही पायेंगे। स्कूल में स्टूडेन्ट भी समझते हैं हम कितने मार्क्स से पास

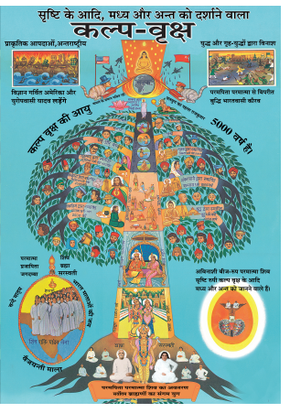

होंगे। तीव्रवेगी जोर से पुरुषार्थ करते हैं। ट्युशन के लिए टीचर रखते हैं कि कैसे भी करके पास होवें।

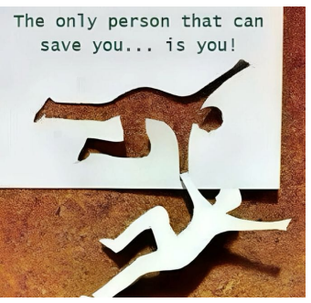

यहाँ भी बहुत गैलप करना है। अपने ऊपर कृपा करनी है। बाबा से अगर कोई पूछे अब शरीर छूटे तो इस हालत में क्या पद पायेंगे? तो बाबा झट बतायेंगे। यह तो बहुत सहज समझने की बात है। जैसे हद के स्टूडेन्ट समझते हैं, बेहद के स्टूडेन्ट भी समझ सकते हैं। बुद्धि से समझ सकते हैं - हमसे घड़ी-घड़ी यह भूलें होती हैं, विकर्म होता है। रजिस्टर खराब होगा तो रिजल्ट भी ऐसी निकलेगी। हर एक अपना रजिस्टर रखे। यूँ तो ड्रामा अनुसार सब नूँध हो ही जाती है। खुद भी समझते हैं हमारा रजिस्टर तो बहुत खराब है। न समझ सकें तो बाबा बता सकते हैं। स्कूल में रजिस्टर आदि सब रखा जाता है। इनका तो दुनिया में किसको पता नहीं है। नाम है गीता पाठशाला। वेद पाठशाला कभी नहीं कहेंगे। वेद उपनिषद ग्रंथ आदि किसकी भी पाठशाला नहीं कहेंगे। पाठशाला में एम ऑब्जेक्ट है। हम भविष्य में यह बनेंगे। कोई वेद शास्त्र बहुत पढ़ते हैं तो

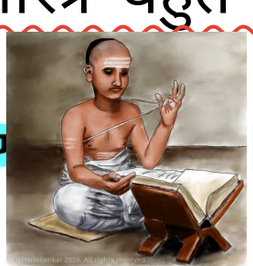

Points: ज्ञान योग धारण M.imp.

उनको भी टाइटिल मिलता है। कमाई भी होती है। कोई-कोई तो बहुत कमाई करते हैं। परन्तु वह कोई अविनाशी कमाई नहीं है, साथ नहीं चलती है। यह सच्ची कमाई साथ चलनी है। बाकी सब खत्म हो जाती हैं। तुम बच्चे जानते हो हम बहुत-बहुत कमाई कर रहे हैं। हम विश्व के मालिक बन सकते हैं। सूर्यवंशी डिनायस्टी है तो जरूर बच्चे तख्त पर बैठेंगे। बहुत ऊंच पद है। तुमको स्वप्न में भी नहीं था कि हम पुरुषार्थ कर राज्य पद पायेंगे। इसको कहा जाता है राजयोग। वह होता है बैरिस्टरी योग, डॉक्टरी योग। पढ़ाई और पढ़ाने वाला याद रहता है। यहाँ भी यह है - सहज याद। याद में ही मेहनत है। अपने को देही-अभिमानी समझना पड़े। आत्मा में ही संस्कार भरते हैं। बहुत आते हैं जो कहते हैं हम तो शिवबाबा की पूजा करते थे परन्तु क्यों पूजा करते हैं, यह नहीं जानते। शिव को ही बाबा कहते हैं। और किसको बाबा नहीं कहेंगे। हनूमान, गणेश आदि की पूजा करते हैं, ब्रह्मा की पूजा होती नहीं। अजमेर में भल मन्दिर है। वहाँ के थोड़े ब्राह्मण लोग पूजा करते होंगे।

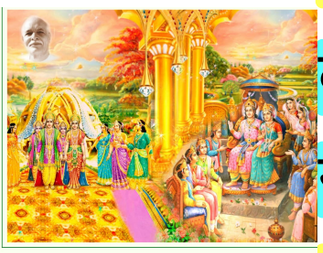

जी मेरे मीठे बाबा..

Thank you so much...

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

बाकी गायन आदि कुछ नहीं। श्रीकृष्ण का, लक्ष्मी-नारायण का कितना गायन है। ब्रह्मा का नाम नहीं क्योंकि ब्रह्मा तो इस समय सांवरा है। फिर बाप आकर इनको एडाप्ट करते हैं। यह भी बहुत सहज है। तो बाप बच्चों को भिन्न-भिन्न प्रकार से समझाते हैं। बुद्धि में यह रहे शिवबाबा हमको सुना रहे हैं। वह बाप भी है, टीचर, गुरू भी है। शिवबाबा ज्ञान का सागर हमको पढ़ाते हैं। अभी तुम बच्चे त्रिकालदर्शी बने हो। ज्ञान का तीसरा नेत्र तुमको मिलता है। यह भी तुम समझते हो आत्मा अविनाशी है। आत्माओं का बाप भी अविनाशी है। यह भी दुनिया में कोई नहीं जानते। वह तो सब पुकारते ही हैं - बाबा हमको पतित से पावन बनाओ। ऐसे नहीं कहते कि वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी आकर सुनाओ। यह तो बाप खुद आकर सुनाते हैं। पतित से पावन फिर पावन से पतित कैसे बनेंगे? हिस्ट्री रिपीट कैसे होगी, वह भी बताते हैं। 84 का चक्र है। हम पतित क्यों बने हैं फिर पावन बन कहाँ जाने चाहते हैं। मनुष्य तो संन्यासी आदि के पास जाकर कहेंगे मन की शान्ति कैसे हो?

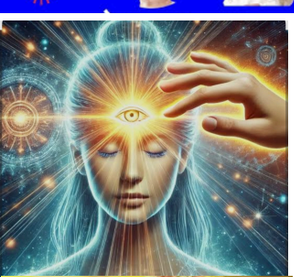

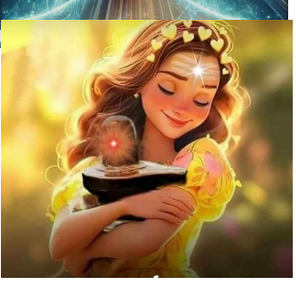

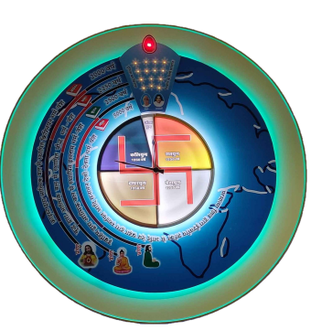

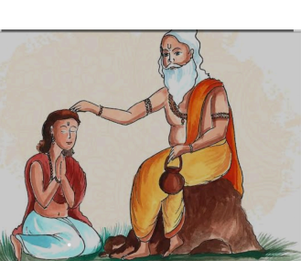

very very very sweet song at last page

ऐसे नहीं कहेंगे हम सम्पूर्ण निर्विकारी पावन कैसे बनें? यह कहने में लज्जा आती है। अभी बाप ने समझाया है - तुम सब भक्तियां हो। मैं हूँ भगवान, ब्राइडग्रुम। तुम हो ब्राइड्स। तुम सब मुझे याद करते हो। मैं मुसाफिर बहुत ब्युटीफुल हूँ। सारी दुनिया के मनुष्य मात्र को खूबसूरत बनाता हूँ। वन्डर ऑफ वर्ल्ड स्वर्ग ही होता है। यहाँ 7 वन्डर्स गिनते हैं। वहाँ तो वन्डर ऑफ वर्ल्ड एक ही स्वर्ग है। बाप भी एक, स्वर्ग भी एक, जिसको सभी मनुष्य मात्र याद करते हैं। यहाँ तो कुछ भी वन्डर है नहीं। तुम बच्चों के अन्दर धीरज है कि अब सुख के दिन आ रहे हैं।

तुम समझते हो इस पुरानी दुनिया का विनाश हो तब तो राजाई मिले स्वर्ग की। अभी अजुन राजाई स्थापन नहीं हुई है। हाँ, प्रजा बनती जाती है। बच्चे आपस में राय करते हैं, सर्विस की वृद्धि कैसे हो? सबको पैगाम कैसे देवें? बाप आदि सनातन देवी-देवता धर्म की स्थापना करते हैं। बाकी सबका विनाश कराते हैं। ऐसे बाप को याद करना चाहिए

ना। जो बाप हमको राजतिलक का हकदार बनाए बाकी सबका विनाश करा देते हैं। नैचुरल कैलेमिटीज भी ड्रामा में नूँधी हुई है। इस बिगर दुनिया का विनाश हो नहीं सकता। बाप कहते हैं अभी तुम्हारा इम्तहान बहुत नज़दीक है, मृत्युलोक से अमरलोक ट्रांसफर होना है। जितना अच्छी रीति पढ़ेंगे पढ़ायेंगे, उतना ऊंच पद पायेंगे क्योंकि प्रजा अपनी बनाते हो। पुरुषार्थ कर सबका कल्याण करना चाहिए। चैरिटी बिगेन्स एट होम। यह कायदा है। पहले मित्र-सम्बन्धी बिरादरी आदि वाले ही आयेंगे। पीछे पब्लिक आती है। शुरू में हुआ भी ऐसे। आहिस्ते-आहिस्ते वृद्धि हुई फिर बच्चों के रहने के लिए बड़ा मकान बना जिसको ओमनिवास कहते थे। बच्चे आकर पढ़ने लगे। यह सब ड्रामा में नूँध थी, जो फिर रिपीट होगा। इसको कोई बदल थोड़ेही सकता है। यह पढ़ाई कितनी ऊंच है। याद की यात्रा ही मुख्य है। मुख्य आंखें ही बड़ा धोखा देती हैं। आंखें क्रिमिनल बनती हैं तब शरीर की कर्मेन्द्रियाँ चंचल होती हैं। कोई अच्छी बच्ची को देखते हैं, तो बस उसमें फँस पड़ते हैं।

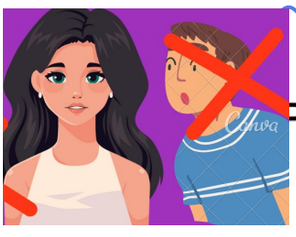

ऐसे बहुत दुनिया में केस होते हैं। गुरू की भी क्रिमिनल आई हो जाती है। यहाँ बाप कहते हैं क्रिमिनल आई बिल्कुल नहीं होनी चाहिए। भाई-बहन होकर रहेंगे तब पवित्र रह सकेंगे। मनुष्यों को क्या पता वह तो हंसी करेंगे। शास्त्रों में तो यह बातें हैं नहीं। बाप कहते हैं यह ज्ञान प्राय: लोप हो जाता है। पीछे द्वापर से यह शास्त्र आदि बने हैं। अब

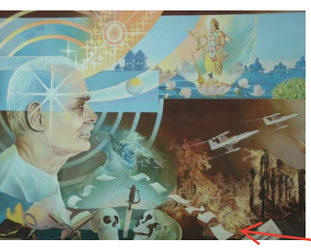

बाप मुख्य बात कहते हैं कि अल्फ को याद करो तो विकर्म विनाश हो जाएं। अपने को आत्मा समझो। तुम 84 का चक्र लगाकर आये हो। अभी फिर तुम्हारी आत्मा देवता बन रही है। छोटी-सी आत्मा में 84 जन्मों का अविनाशी पार्ट भरा हुआ है, वन्डर है ना। ऐसे वन्डर ऑफ वर्ल्ड की बातें बाप ही आकर समझाते हैं। कोई का 84 का, कोई का 50-60 जन्मों का पार्ट है। परमपिता परमात्मा को भी पार्ट मिला हुआ है। ड्रामा अनुसार यह अनादि अविनाशी ड्रामा है। शुरू कब हुआ, बन्द कब होगा - यह नहीं कह सकते क्योंकि यह अनादि अविनाशी ड्रामा है। यह बातें कोई जानते नहीं।

It goes on and on and on.....

अच्छा!

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

Take it Seriously..

1) अभी इम्तहान का समय बहुत नज़दीक है इसलिए पुरुषार्थ कर अपना और सर्व का कल्याण करना है, पढ़ना और पढ़ाना है, चैरिटी बिगेन्स एट होम।

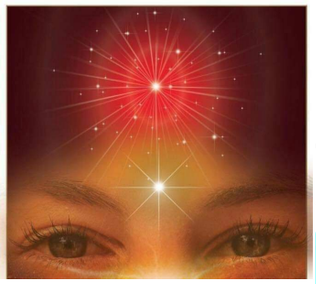

2) देही-अभिमानी बन अविनाशी, सच्ची कमाई जमा करनी है। अपना रजिस्टर रखना है। कोई भी ऐसा विकर्म न हो जिससे रजिस्टर खराब हो जाए।

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

वरदान:- **सर्व को उमंग-उत्साह का सहयोग दे शक्तिशाली बनाने वाले सच्चे सेवाधारी भव**

Definition of

सेवाधारी अर्थात् सर्व को उमंग-उत्साह का सहयोग देकर शक्तिशाली बनाने वाले।

So, Be Prepared

अभी समय कम है और रचना ज्यादा से ज्यादा आने वाली है। सिर्फ इतनी संख्या में खुश नहीं हो जाना कि बहुत आ गये। अभी तो बहुत संख्या बढ़नी है इसलिए आपने जो पालना ली है उसका रिटर्न दो।

आने वाली निर्बल आत्माओं के सहयोगी बन उन्हें समर्थ, अचल अडोल बनाओ तब कहेंगे सच्चे सेवाधारी।

स्लोगन:- रूह को जब, जहाँ और जैसे चाहो स्थित कर लो - यही रूहानी ड्रिल है।

Definition of

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

अव्यक्त इशारे -

अब लगन की अग्नि को प्रज्वलित कर

योग को ज्वाला रूप बनाओ

पावरफुल मन की निशानी है - सेकण्ड में जहाँ चाहे वहाँ पहुंच जाए।

मन को जब उड़ना आ गया, प्रैक्टिस हो गई तो सेकण्ड में जहाँ चाहे वहाँ पहुंच सकता है।

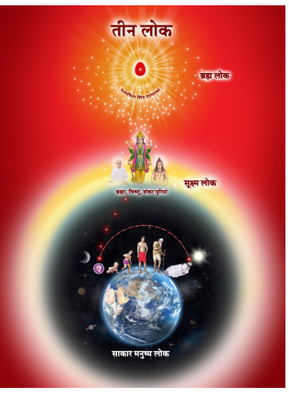

अभी-अभी साकार वतन में, अभी-अभी परमधाम में, सेकण्ड की रफ्तार है - अब इसी अभ्यास को बढ़ाओ।

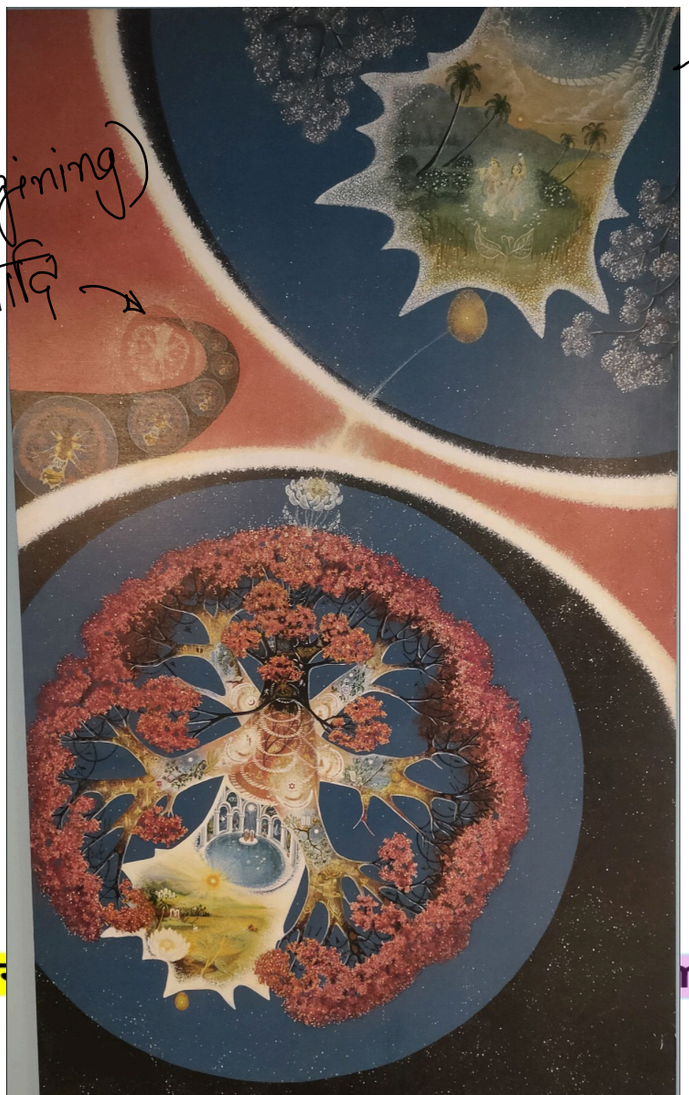

Points: ज्ञा np.

पुछो अपने आप से...

54 समझा?

सर्व शक्तियों का स्टॉक जमा किया है? क्योंकि अगर स्टॉक जमा नहीं होगा तो अनेक जन्म की प्रालब्ध को भी पा न सकेंगे। इसी एक जन्म में अनेक जन्मों का जमा करते हो। इतना जमा किया है जो 21 जन्म वह प्रालब्ध भोगते रहो? इतनी जमा किया है, जो भिखारी आत्माओं को महादानी बन दान कर

पुछो अपने आप से...

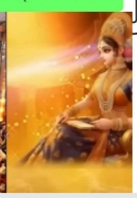

सको? सदा स्टॉक को चेक करो। स्टॉक में सर्वशक्तियां चाहिए। ऐसे नहीं समाने की शक्ति है, सहन शक्ति नहीं तो हर्जा नहीं। लेकिन फाइनल पेपर में क्वेश्चन वही आएगा जिस शक्ति की कमी है। ऐसे कभी नहीं सोचना - छः नहीं दो तो हैं, धारणा नहीं है, सर्विस तो है ही। सर्विस नहीं है, योग तो है ही। लेकिन सब चाहिए। जैसे बाप में सब है ना ज्ञान, शक्ति, गुण.... तो फालो फादर करना है।

समझा?

Attention Please..!

8/9/25

(30.06.1977)

अमृतवेले मिलन की तैयारी

ये पक्का कर लो...

5.1 अधिकारीपन का अनुभव : 9/9/25

सभी सुबह को उठते ही गुडमार्निंग करते हो? याद में बैठते हो? रोज़ अमृतवेले उठते ही पहले याद में बैठना। अमृतवेला हुआ, आँख खुली और सेकण्ड में जम्प लगा कर बाप के साथ बैठ जाओ। साथ के कारण जो बाप के खज़ाने सो आपके खज़ाने अनुभव करेंगे। नालेज के आधार पर नहीं, लेकिन प्राप्ति के आधार पर। अधिकार के तख्त पर बैठे हुए होने के कारण, अधिकारीपन का अनुभव होगा। तो बाप खुदादोस्त के रूप में अधिकार का तख्त ऑफर कर रहे हैं। उठो और तख्त पर बैठ जाओ। **थोड़े समय के अधिकार के तख्त-निवासी होने से, जो भी चाहो वह बन सकते हो।** जैसे हद के राजा थोड़े समय की राजाई से क्या अधिकार में नहीं कर लेते हैं! अब बेहद तख्तनशीन इस गोल्डन समय पर वर्तमान समय सहज ही अपनी गोल्डन एज स्थिति बना सकते हो और भविष्य गोल्डन एज दुनिया में श्रेष्ठ पद प्राप्त कर सकते हो। समझा, सहज पुरुषार्थ का समय और सहज साधन!

m. Imp.

आज मुज आत्मा सजनी की मेरे प्यारे साजन से और उस प्राणप्यारे साजन की मुज सजनी से कुछ खट्टी कुछ मीठी अर्थात मजेदार रूह रीहान।

##########

song
Click

Manwa laage.. o manwa laage
Laage re sanware
Laage re sanware
Le tera hua jiya ka, jiya ka, jiya ka ye gaanv re

(मेरे प्यारे साजन,
मेरा मन जो की अब आप से ही लगा/जुड़ा रहता है जिससे की अब तो मेरे जिया का ये सारा गाँव आपका हुआ अर्थात ये दिल अब आपका और सिर्फ आपका हुआ।)

Manwa laage.. o manwa laage
Laage re sanware
Laage re sanware

Le khela maine jiya ka, jiya ka, jiya ka hai daav re
(और साथ ही साथ आपको पाने के लिए मैंने दिल/जान की बाज़ी लगा दी हैं।)

Musaafir hoon main door ka
Deewana hoon main dhoop ka
Mujhe na bhaye.. na bhaye, na bhaye chaanv re
(ओ मेरी प्यारी सजनी,
मैं हसीन मुसाफिर बहुत दूर, परमधाम से आया हुआ हूँ।
और मैं तो धुप/पवित्रता का ही दीवाना हूँ,
मुझे रिंचक मात्र भी छाँव/अपवित्रता भाति/पसंद नहीं हैं।)

Manwa laage.. o manwa laage
Laage re sanware
Laage re sanware
Le tera hua jiya ka, jiya ka, jiya ka ye gaanv re

समझाया है - तुम सब भक्तियां हो। मैं हूँ भगवान, ब्राइडग्रुम। तुम हो ब्राइड्स। तुम सब मुझे याद करते हो। मैं मुसाफिर बहुत ब्युटीफुल हूँ। सारी दुनिया के मनुष्य मात्र को खूबसूरत बनाता हूँ। 9/9/25

#####======$$$$$
【मैं आत्मा सजनी】
Aisi kaisi boli tere naino ne boli
Jaane kyon main doli
Aisa lage teri ho li main, tu mera..

(मेरे नयनो के नूर मेरे प्यारे साजन,
तुम्हारे नयनों ने ऐसी तो कैसी बोली बोली, जिससे की मुझे पता भी न रहा अर्थात सुधबुध भूल कर तुम्हारे प्यार में डोलने लगी अर्थात मगन/पागल हो गई।
और ऐसा लगा जैसे की मैं तो तुम्हारी हुई,
और तुम सिर्फ और सिर्फ मेरे.....)

(शिव साजन:)
mm.. Tune baat kholi kacche dhaago me piro li
Baaton ki rangoli se na khelun aise holi main
naa tera..
(ओ मेरी भोली सजनी 【भोली अर्थात जो माया के सभी रूपों को जानती नहीं की माया भी सर्वशक्तिमान हैं और एक पल की भी गफलत तुजे मेरा होने नहीं देंगी अर्थात दूर कर देंगी】,

तूने बाते तो बहुत ही अच्छी अच्छी और मीठी मीठी बोल के बातो की बहुत बड़ी और बापदादा को आकर्षित करने वाली माला ही बना ली।

परंतु सिर्फ ऐसी प्यारी प्यारी बातो की रंगोली से मैं तुम्हारे साथ होली नहीं खेलूंगा अर्थात मुझे तुमने जो भी बातों रूपी वायदे किये हैं उसे practical कर के दिखाओ।

तो जब तक तुम practical proof नहीं देती तब तक मैं तुम्हारा नहीं बन सकता।)

【मैं आत्मा सजनी】
O.. kisi ka toh hoga hi tu
Kyun na tujhe main hi jeetun
(ओ मेरे प्यारे दिलतख्तनशीं साजन,
ये बात तो आपको माननी ही पड़ेंगी की किसी न किसी के आप साजन तो बनेंगे ही।
तो आपको क्यों न मैं ही जीतूं?

फिर चाहे उसके लिए कोई भी कीमत क्यों न चुक्तू करनी पड़े।

मेरे प्यारे साजन,
Please Underline the word कोई भी।)

【शिव साजन मंद मंद मुस्कुराते हुए बोले की..】
Khule khabon me jeete hain, jeete hain baawre
(मैं सारी श्रुष्टी का मालिक हूँ और मुझे पाने के लिए तुम जैसी कई सारी आत्माओ रूपी बाँवरी/पागल सजनिया ऐसे ही ख्वाबों में जीती हैं।

उसे ये मालुम नहीं की मुझे पाने के लिए कितनी कठिनायों का सामना करना पड़ेंगा, कितनी दृढ़ता रखनी होंगी।)

【मैं आत्मा सजनी】
Mann ke dhaage, o mann ke dhaage
Dhaage pe saanwre
Dhaage pe saanwre
Hai likha mene tera hi, tera hi, tera hi to naam re
(ओ मेरे मन के मीत,
चाहे आप मानो या न मानो परंतु मैंने जब से ब्राह्मण जन्म लिया हैं तबसे आपको पाने का ही लक्ष्य रखा हैं अर्थात मैंने मेरे मन के धागों पर सिर्फ और सिर्फ आपका ही नाम लिखा हैं।

और आप देखते जाइए - जो भी बातें मैंने कही हैं आपसे, उसको चाहे कितने ही कष्ट सहन कर के या फिर मर कर भी पूरा करेंगे।)

#####$$$$$$#####

【मैं आत्मा सजनी अपने मन ही मन】
Ras bundiya nayan piya raas rache
(मेरे नयनो की रस बून्द अर्थात मेरे नयनो के नूर मेरे साजन,
आप जब दादी गुलज़ार के तन में आते हो और stage पर खड़ी सभी आत्मा रूपी गोपिओ के साथ रास रचते हो और मिलते हो - जैसी दादी जानकीजी से मिलते हो।)

Dil dhad dhad dhadke shor mache
(तो दूर बैठी मुज आत्मा के इस दिल में अपरम अपार गति से धड़कने शोर मचाती हैं और मैं पागल बन सोचती हूँ की मैं कब दादी जी के मुआफिक ही साकार में तुमसे मिलूंगी?)

Yun dekh sek sa lag jaaye
Main jal jaaun bas pyaar bache
(और दादी को आपसे ऐसे मिलते हुए देख,

आप शमा का मुज परवाने पर शेक सा लगता हैं और उस ही शेक के कारन मैं इस देह अभिमान और सर्व विकारो सहित आप शमा पर एक पल की भी सोच बिना फ़िदा हो जाती हूँ , जिससे की बस आप और मैं अर्थात हमारा प्यार शेष रह जाता हैं।)

####$$$$%%%%

【आखिर भी वह दिन अब आया की आया, जब मेरे प्यारे साजन आप मुझसे कहेंगे की..】

Aise dore daale kaala jaadu naina kaale
Tere main hawaale hua seene se laga le
Aa.. main tera...
(मेरी सिकिलधि सजनी,
तुम्हारी ध्रुव के मुआफिक लगन के कारन, और अर्जुन के मुआफिक तुम्हारी नज़रे जो सदा ही मुज पर टीकी रहती हैं अर्थात तुम्हारा मुझे पाने का ही एक मात्र जो लक्ष्य हैं और जब की अब आखिर वो लक्ष्य अर्थात मुझे पा ही लिया हैं तो ...

मैं भी अब तुम्हारे हवाले हुआ हूँ - तो आ जाओं मेरी बाहों में और मुझे अपने सीने से लगा लो अर्थात बाहों में ले लो।

तो अब मैं आख़िरकार सिर्फ और सिर्फ तुम्हारा हुआ।)

O.. dono dheeme dheeme jalein
Aaja dono aise milein
Zameen pe laage, na tere, na mere paanv re
(सारे कल्प के हिसाब से जो अब थोडा सा संगम का समय बचा हुआ हैं उसमे हम सच्चे प्यार की अगन में एक दूसरे में समा कर ऐसे धीमे धीमे जले की जिससे तुम्हारी 5000 वर्षो की प्यास बुज जाएँ।

और ऐसे combined रहे की उस स्थूल वतन या देहभान रूपी जमीं पे एक पल के लिए भी तुम्हारे पाँव न लगे और मैं तो हूँ ही परमधाम निवासी।)

Manva laage.. manva laage
Laage re sanware
Laage re sanware
Le tera hua jiya ka, jiya ka, jiya ka ye gaanv re

【मैं आत्मा सजनी】
Rahoon main tere naino ki, naino ki,
naino ki hi chaanv re...
(मेरे प्यारे साजन,
बस अब तो मुझे रहना ही हैं तुम्हारे नैनो की ही छाँव में।)

Le tera hua jiya ka, jiya ka, jiya ka ye gaanv re
Rahoon main tere naino ki, naino ki,
naino ki hi chaanv re...